International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 8 Issue 1, January-2019, Impact Factor: 3.578

दृश्य माध्यमों से बदलता जीवन : मलयालम कहानियों में

डॉ. शहला. के. पी

सहायक प्राध्यापिका (कोंट्राक्ट बेसिस) हिंदी विभाग कालिकट विश्वविद्यालय

सन् 1990 के बाद उदारीकरण की नीतियों ने देश की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों व यथार्थ में पर्याप्त परिवर्तन किया जिसके चलते हमारे समय का यथार्थ एकरैखिक न होकर जटिल व धूसर हो गया है। तकनीक के अत्यधिक विस्तार ने हमारे जीवन को बेतहाशा प्रभावित किया। दृश्य माध्यमों का हमारे जीवन पर बढ़ता प्रभाव इस बात की तरफ स्पष्ट इशारा करता है कि हम वाकई में दृश्य माध्यमों से घिरे हैं और हमारा पूरा जीवन, हमारी चेतना, सोचने का ढंग कहीं न कहीं इन्हीं दृश्य माध्यमों से निर्धारित हो रहा है। दरअसल दृश्य माध्यमों ने यथार्थ की जगह छाया यथार्थ को हमारे जीवन में प्रतिष्ठित कर दिया है। जिसका नतीजा समाज व जीवन के तमाम क्षेत्रों में हम अलगाव, हिंसा, सामूहिकता का लोभ, वैयक्तिकता, अनैतिकता आदि के प्रसार के रूप में देख रहे है। आज का मलयालम कथासाहित्य इस पूरे उत्तर आधुनिक नव यथार्थ को उसकी समग्रता व समूची गतिशीलता में पकड़ने की सफल कोशिश है। इस संदर्भ में अम्बिकासूतन मांगाड और संतोष एच्चिकानम की कहानियों को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

संतोष एच्चिक्कानम की वार्ताशरीरम' नामक कहानी मीडिया संस्कृति के शिकार बने शरीर के वर्तमान काल का आख्यान करती है। कहानी की पाट्टियम्मा अपनी कुटिया से पड़ोस के घर में 'कम्मीषणर' सिनेमा देखने जाती है। सिनेमा देखने जाते वक्त बुखार से पीडित पोता कहता है कि अम्मा, मुझे भूख लगी है, लेकिन पाट्टियम्मा कहती है कि सिनेमा देखकर वापस आते ही हम खाएंगे। लेकिन रात को जब वे लौट आते हैं तब देखते हैं कि पूरा भात कुतिया ने खाया है। सिनेमा देखने की अधिक उत्सुकता में वे लोग दरवाजा बन्द करना भूल गये थे। उस बच्चे का शरीर तवे के समान जल रहा था। लेकिन यहां माँ केलिए अपने बेटे की तबियत से ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि सूपर स्टार का सिनेमा देखना। यहाँ पाट्टियम्मा अपनी ज़िन्दगी के यथार्थ को भूल जाती है। पाट्टियम्मा को रेडियो सुनने की आदत थी जिससे वह संसार की सारी बातों की जानकारी रखती थी। वह अर्नोल्डष्वासनेगर को जानती है , यूरोप के हड़ताल के बारे में जानती है लेकिन अपने पोते की बुखार और भूख उसकेलिए ध्यान देने की बात ही नहीं थी। वह अपनी नित्य कर्म की तरह रेडियो सुनने लगती है। हम इस प्रकार मीडिया का शिकार बन रहे हैं कि हमें किसी और के बारे में सोचने का वक्त भी नहीं मिलता है। आज मां-बाप को अपने बच्चे को पुचकारने दुलारने का भी वक्त नहीं है। घर के लोग चैनलों के भरमार से उसमें बिजी रहते हैं।एक के बाद एक कार्यक्रम के चलते वे टेलीविज़न के सामने ही बैठते हैं। आज बाज़ार की दुनिया हमारी मनुष्यता को चूस रही है। माध्यमों के प्रभाग से आज हमारे संबंधों में भी बदलाव आया है। आपसी रिश्तों की मधुरिमा आज गायब हो चुकी है।

मीडिया जो कुछ भी परोस रहा है वह मानव के मन -मस्तिष्क को पलटकर उसकी आकांक्षाओं , इच्छाओं और व्यवहार की सहज प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रहा है। टेलीविज़न और अन्य दृश्य माध्यमों से उसका जीवन पथ निश्चित हो रहा है। पूरी युवा पीढ़ी इस नए जाल के शिकंजे में है। अपने जीवन यथार्थ के ऊपर मीडिया एक अजीब सा मायाजाल हमारे ऊपर थोंपता है। अम्बिकासूतन मांगाड की कहानी पुतिय अवतारडल' (नये अवतार) का नायक सुगुणन मोहनलाल का बड़ा फान है। वह अपने सूपरस्टार को देखने केलिए घर बार बेचकर और सूद पर पैसा लेकर घर से निकलता है। सुपर स्टार के प्रति उसकी आराधना उसे ले डूबता था। रास्ते में उसका पर्स चोरी हो जाता है जिसमें ट्रेन का टिकट भी था। बिना टिकट के यात्रा करने से उसे टी .टी के द्वारा धक्का खाना पड़ता है। दाँत टूटने से पूरा चेहरा लहुलुहान हो जाता है। फिर भी वह नरसिंहम' सिनेमा के हीरो जैसे उठने की कोशिश करता है। बाद में जब वह पैर खींच-खींचकर चलता है, तभी कुछ लोगों को एक स्त्री के साथ ज़बरदस्ती करते हुए देखता है। तब उसे जोश आता है और उन गुण्डों को अपने हीरो जैसे घूसा मारकर भर्ता बनाना चाहता है। लेकिन उसके विपरीत उसीका भर्ता बन जाता है और वह नाली में गिर जाता है। अंत में उसे पुलिस स्टेशन भी जाना पड़ता है। पुलिसवाले वहाँ दर्ज किये गये सभी गुनाहों को उसके ऊपर थोपने की कोशिश करते हैं। यहाँ कहानीकार हमें यह संकेत देता है कि मीडिया मनुष्य के नये अवतार को जन्म देता है और वह अवतार बिल्कुल अमानवीय भी है। यह दुर्भाग्य की बात है कि इससे हमारे मानव मूल्य सब नष्ट हो रहे हैं।

मीडिया हर खबर को मनाकर उसपर अतिगंभीर वाद -विवाद चलाते हैं। लेकिन समस्याओं को उछालने और उजागर करने के अलावा उसका कोई सटीक समाधान प्रस्तुत नहीं करते हैं। संतोष एच्चिक्कानम की कहानी कोमाला' में मीडिया की इसी रूप का चित्रण देख सकते है। कथानायक विश्वन के घर और भूमि जब्त करने का नोटीस आया है। तब वह घर के बाहर ऐसा एक बोर्ड लगाता है कि अगस्त पंद्रह सुबह को वह अपने परिवार के साथ आत्महत्या करेंगे। चैनलों केलिए यह ताज़ा खबर बनता है। वे न्यूसटाइम की चर्चा केलिए इस खबर को विषय बनाता है। चर्चा में बैंक सेक्रेटरी माधवन नायर, प्रसिद्ध समाज सेवी और मनोवैज्ञानिक श्री नंदकुमार, आत्महत्या की कानूनी बातों के बारे में बात करने केलिए उच्च न्यायालय के अधिवक्ता फातिमा बेगम और नेशनल क्राइम रिकॉर्डस रिसर्च ब्यूरो के वरिष्ठअधिकारी अलक्स पुन्नूस आदि शामिल होते हैं। बीच में टेलिफोन लाइन में विश्वन अपनी बात भी कहता है। श्री . अलक्स पुन्नूस कहते हैं कि केरल कोमाला बन गया है। मेक्सिको के प्रसिद्ध लेखक हुवान रुल्फो के पेद्रोपरामो ' शीर्षक उपन्यास की कथाभूमि है कोमाला शहर। वहाँ सब लोग अपने अंदर से मर चुके हैं। यह सच है कि हम भी उन मरे लोगों में एक है। हमारी सारी संवेदना टूट चुकी है। चर्चा के अंत में चैनल अपनी वोटिंग नीति अपनाता है- आपकी राय में विश्वन को आत्महत्या करना चाहिए या नहीं? लोगों को चौबीस घंटे का समय दिया जाता है। लेकिन केरल के करोड़ों लोगों में से एक भी वोट नहीं मिलता है।

आज की युवा पीढ़ी को सबसे अधिक विज्ञापनों ने प्रभावित किया। अम्बिका सूदन माझड की अनुभूतिकल्क निरम ' कहानी में मुकुन्दन मेनोन विज्ञापन लिखते-लिखते उसका निजी जीवन विज्ञापन की तरह ही बना देता है। जब वह साबुन केलिए विज्ञापन तैयार करता है। तब अपनी बेटी को हल्का-सा छोटा कपडा देकर पहनकर आने को कहता है। अपनी बीवी से गले लगाते समय विज्ञापनों के ही शब्द बोलता है मैं अपनी अनुभूतियों को रंग देता है "। मुकुन्दन मेनोन जितने प्रोडेक्ट केलिए विज्ञापन बनाये थे , मार्केट में उन प्रोडेक्ट की खूब मांग थीं। लेकिन कुछ सालों के बाद कोरपरेट शक्तियों के हस्तक्षेप के कारण वे सारे प्रोडेक्टस की बिक्री भी तहस-नहस हो जाती है। यहाँ कहानीकार मार्केट के रचनात्मकता या सृजनात्मकता को खत्म करने की नीति का भी संकेद देता है। सबसे जरूरी बात है कि मार्केट हमारे बेडरूम तक पहुँच गया है। हम लोगों का पूरा जीवन विज्ञापनों से नियंत्रित हो जाता है। विज्ञापनों या मार्केट का हस्तक्षेप हमारे जीवन में इतना हो गया है कि मनुष्य खुद विज्ञापन या उत्पाद में तब्दील हो जाता है। यानी यह बहुत ही विडम्बना है , जिसे मनुष्य ने रचा, वह ही मनुष्य के जीवन को नियंत्रित करने लगता है, उसपर शासन करने लगता है। बेडरूम तक की उसकी पहुँच के कारण हमारा कुछ भी व्यक्तिगत नहीं रह गया है। उसने निजता के मूल्य को खतम कर दिया है।

उत्तर आधुनिकता में तकनीक ने आभासी यथार्थ को ही यथार्थ बना दिया है। विडम्बना यह है कि हम उसी अभासी यथार्थ को यथार्थ मानकर चलने लगे हैं और अपना जीवन का व्यवहार उसी हिसाब से करने लगे हैं जिसका नतीजा यह है कि हम जीवन के वास्तविक यथार्थ को दरकिनार कर देते हैं और इस क्रम में वह अत्यधिक भयावह व क्रूर बन जाता है। उपरोक्त कहानियाँ इसी विडम्बना को दर्शाती हैं।

सन्दर्भ :

[1]. संतोष एच्चिक्कानम, 'वार्ताशरीरम', मंजुमनुष्यर कहानी संग्रह, , डी सी बुक्स, कोट्टयम
[2]. अंबिका सूतन मांगाड, 'पुतिया अवतारंगल', कोमेर्षियल ब्रेक कहानी संग्रह, करंट बुक्स, तृशूर २००२
[3]. संतोष एच्चिक्कानम, 'कोमाला', मंजुमनुष्यर कहानी संग्रह, डी सी बुक्स, कोट्यम
[4]. अंबिका सूतन मांगाड, अनुभूतिकल्क निरम, वालिलात्ता तुंबी, डी सी बुक्स, कोट्टयम
[5]. अंबिका सूतन मांगाड, परक्कुन्ना सुंदरिकल, चिंता पब्लिशेर्स, २०१७